I2OR Impact Factor : 3.250 ISSN 2349-364X

वेदाञ्जली Vedanjali

अन्तर्राष्ट्रीय विद्वत्समीक्षित षाण्मासिकी शोधपत्रिका

(International Peer Reviewed Refereed Journal of Multidisciplinary Research)

वर्ष-८ अंक-१६, भाग-२ जुलाई-दिसम्बर, २०२१

प्रधान सम्पादक
डॉ० रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

प्रकाशन : वैदिक एजूकेशनल रिसर्च सोसाइटी, वाराणसी

संरक्षकद्वय
जगत्‌शिष्य पं. शिवपूजन चतुर्वेदी
श्री नरवट वॉयस (जर्मनी)

प्रधानसम्पादक
डॉ0 रामकेश्वर तिवारी

सह सम्पादक
श्री प्रसून मिश्र

सम्पादक मण्डल
प्रो0 उमाकान्त चतुर्वेदी
प्रो0 ब्रजभूषण ओझा
प्रो0 रंजन कुमार त्रिपाठी
डॉ चन्द्रकान्त दत्त शुक्ल

शोध पत्र–समीक्षक मण्डल
- डॉ0 उमापति मिश्र, अतिथि अध्यापक, वेद विभाग, का0हि0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 पवन कुमार यादव, सहायकाचार्य, दर्शन, सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, प्रयागराज
- डॉ0 चिरंजीवी अधिकारी, सहायक आचार्य, व्याकरण, कु0भा0व0स0पु0अ0 विश्वविद्यालय, असम
- डॉ0 निर्भय कुमार पाण्डेय, सहायकाचार्य, ज्योतिष, रामाधीन मिश्र भा0स0म0 देवढ़िया, बक्सर
- डॉ0 नीरज तिवारी, सहायकाचार्य, साहित्य, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर, लखनऊ
- डॉ0 नन्दकिशोर तिवारी, सहायकाचार्य, व्याकरण, राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान, भोपाल परिसर, लखनऊ
- डॉ0 रविशंकर पाण्डेय, सहायकाचार्य, संस्कृतविद्या विभाग, स0स0वि0वि0, वाराणसी
- डॉ0 सुनील कुमार तिवारी, सहायकाचार्य, हिन्दी, शहीद भगत सिंह कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
- डॉ0 अशोक राम, असि0प्रोफेसर, भूगोल विभाग, एस0एन0 सिन्हा कॉलेज, वार्सलिगंज, बिहार
- डॉ0 शशिकान्त तिवारी, सहायक आचार्य (दर्शन), महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा

परामर्शदात्री समिति
प्रो0 बाल शास्त्री
प्रो0 हरेराम त्रिपाठी
प्रो0 हरीश्वर दीक्षित
प्रो0 संतोष शुक्ल
डॉ0 राजीव रंजन तिवारी
प्रो0 रमेशचन्द्र पण्डा
प्रो0 मुरली मनोहर पाठक
प्रो0 श्रीपति त्रिपाठी
डॉ0 कामेश्वर उपाध्याय
श्री जय प्रकाश चतुर्वेदी

प्रकाशन तिथि : 28 / 09 / 2021

सम्पर्क सूत्र
श्री अंकित दुबे
दूरभाष : 9473531601
Website : vedanjalijournal.com / e-mail : vedanjali2014@gmail.com

---

विशेष : पत्रिका के किसी भी प्रकार की समस्या के समाधान का अधिकार संरक्षकों के पास स्थायी रूप से सुरक्षित है तथा लेखकों के शोध–पत्र उनके अपने विचार हैं, पत्रिका परिवार उनके विचारों से सहमत हो यह आवश्यक नहीं है।

- संस्कृतनाट्यसाहित्ये महाकविराजशेखरस्य योगदानम् 312–316
  सोमनाथ तिवारी
- शब्दशास्त्रपदार्थत्वेन स्फोटस्य विचारः 317–321
  सोनाली मण्डलः
- श्रीमद्भगवद्गीतायां स्मृतिशक्तिविकाशोपायाः एकं विश्लेषणात्मकमध्ययनम् 322–326
  मानस मण्डलः
- **Crisis in Mali: Intra-State Conflict in Sub-Saharan Africa** 327-331
  Bharat Singh
- **The Social Context of Yoga : Studying Transnational Flows in India** 332-336
  Dinesh & Prof. Ganesh Shankar
- **Vyasa Bhashya on Patanjali's Yoga Sutra is at least 5000 years old, say scientific evidences** 337-341
  Dr. Ranjay Kumar
- **A Study of Factors Influencing Personality Development According to Panchamahakavyas** 342-347
  Dr. Sibasish Pagal
- **Role of Media in Shaping Society & Social Networking Sites in Internal Security Challenges** 348-353
  Mamta Sharma & Dr. Professor Jamna Lal Purohit
- **An evaluation of the concept 'Prapatti' in Vaiṣṇavism** 354-356
  Niveditha R Dileep
- **A Critycal Study of the Concept of sammā-Diṭṭhi (Right View) in Theravāda Buddhism** 357-359
  Thach Lon
- **Gender sensitization and the Glass Menagerie** 360-364
  Dr. Jyotsna Kumari

♦♦♦

वेदाञ्जली, An International Peer Reviewed Refereed Research Journal
वर्ष-८, अंक-१६, भाग-२, जुलाई दिसम्बर, २०२१ | ISSN : 2349-364X | I2OR Impact Factor : 3.250

श्रीमद्भगवद्गीतायां स्मृतिशक्तिविकाशोपायाः एकं विश्लेषणात्मकमध्ययनम्

मानस मण्डलः*

प्रवृत्तिबीजम् - अद्वैतवेदान्ते प्रस्थानत्रयं सुप्रसिद्धमस्ति। तत्र स्मृतिप्रस्थाने श्रीमद्भगवद्गीता अन्तर्भूता अस्ति। सर्वदर्शनसमन्वयात्मकं श्रीमद्भगवद्गीताशास्त्रं हि लोकानां मोहापनोदनपुरस्सरं सर्वविधकल्याणार्थं भगवता श्रीकृष्णेन प्रकाशितम्। मानवजीवने ज्ञानस्य महत्त्वपूर्णं स्थानं वरीवर्ति। तदुक्तं भगवता न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते। ज्ञानं खलु प्रकृतिविकृति-तत्सङ्घातजीवात्मतद्बन्धमोक्षपरमात्मविषयकं मानवानां शाश्वतशान्त्युपलब्ध्यनुगुणम्। भौतिकप्रपञ्चे व्यस्तानां दुःखपङ्क्तिनिमग्नानामशान्तानां प्राणिनां कृते शान्तिमार्गन्वेषमेव अस्याः श्रीमद्भगवद्गीतायाः लक्ष्यमिति। एतेषां कृते तु स्मृतिशक्तेः अपेक्षा वर्तते। जीवो यदा एकाग्रचित्तो भवति तदा मनसि किं तावदधिकर्त्तव्याकर्त्तव्यम्, अधिभाक्ष्याभक्षं किम्, कोऽहम्, कुतः समागतोऽहं, क्व गन्तव्यं, का मुक्तिः, का चोपासनप्रणाली इति प्रश्ने समुपस्थिते शास्त्रमेव प्रमाणमिति, तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ इति भगवदुक्तेः।

मनोवैज्ञानिकतत्त्वमाधारीकृत्य स्थिरस्मृतेरुपायदर्शने गीतेयमत्यन्तं विलक्षणं स्थानमावहति। चित्तस्य शुद्धतानुगुणमेव स्मृतिः स्थिता भवति। आहारशुद्धौ सत्त्वशुद्धिः, सत्त्वशुद्धौ ध्रुवा स्मृतिरिति अभियुक्त्यनुसारेण शुद्धभोजनेन बुद्धिःशुद्धा भवति स्थिरा च भवति। सात्त्विकभोजनेन सात्त्विकी बुद्धिः, राजसिकभोजनेन राजसिकी बुद्धिः, तामसिकभोजनेन च तामसिकी बुद्धिः सञ्जायते। श्रीमद्भगवद्गीतायां सात्त्विकादीनामाहाराणां तत्परिणामञ्च प्रदर्शितम्। तदुक्तम् –

आयुः सत्त्वबलारोग्यसुखप्रीतिविवर्धनाः।
रस्या स्निग्धाः स्थिरा हृद्या आहारा सात्त्विकप्रिया॥[1]
कट्वम्ललवणात्युष्णतीक्ष्णरूक्षविदाहिनः।
आहारा राजसस्येष्टा दुःखशोकामयप्रदाः॥[2]
यातयामं गतरसं पूतिपर्युषितं च यत्।
उच्छिष्टमपिचामेध्यं भोजनं तामसप्रियाम्॥[3]

चित्तस्य स्थिरीकरणार्थं नैके उपायाः शास्त्रेषु विहितास्सन्ति। यदा चित्तं प्रसन्नं भवति मनः प्रसन्नं भवति तदानीमेव स्मृतिरपि स्थिरा भवति विषयासक्तं चित्तं न कदापि स्थिरतामाप्नोति। अतो विषयेभ्योऽनाशक्तः सन् परब्रह्मापरपर्यायस्य आत्मनो भगवतः आराधनेन चित्तं स्थितिपदं लभते इति श्रावयति कठश्रुतिः –

आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयांस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥
यस्त्वविज्ञानवान्भवत्ययुक्तेन मनसा सदा।
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्चा इव सारथेः॥

---

*गवेषक, पाचथुपि-हरिपद-गौरिवाला-महाविद्यालयः (SACT)

Bengali Peer-Reviewed Journal
সংশপ্তক
ISSN 2454-4884
2454-4884
সপ্তম বর্ষ ।। দ্বিতীয় সংখ্যা ।।
জুন - ২০২২
সম্পাদক : ড. উত্তম দাস

সংশপ্তক, SAMSAPTAK

Peer- Reviewed Journal

২০২২, জুন

Vol.7, Issue-2

সপ্তম বর্ষ ।। দ্বিতীয় সংখ্যা

ISSN-2454-4884

পত্রিকা অধিকর্তা (Magazine Director)

প্রফেসর উৎপল মণ্ডল,(উত্তরবঙ্গ বিশ্ববিদ্যালয়)

সম্পাদক (Editor)

ড.উত্তম দাস, সহকারী অধ্যাপক , বাংলা বিভাগ

বীরভূম মহাবিদ্যালয় , সিউরি

Name of the Editorial Advisory Board & Peer Review Committee

ড. প্রকাশ মাইতি (বানারস হিন্দু বিশ্ববিদ্যালয়)

ড. রীতা মোদক (বিশ্বভারতী)

ড.সুখেন বিশ্বাস (কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়)

ড.সাবলু বর্মণ (কোচবিহার পঞ্চানন বর্মা বিশ্ববিদ্যালয়)

ড. পার্থসারথি মুখোপাধ্যায় (বীরভূম মহাবিদ্যালয়)

প্রফেসর তপন কুমার বিশ্বাস (কল্যাণী বিশ্ববিদ্যালয়, ডিন,আর্টসএন্ড কমার্স)

=====

পরবর্তী সংখ্যার বিষয়

সমাজ, সাহিত্য ও সংস্কৃতি বিষয়ক যে কোনো প্রবন্ধ

অভ্রতে কালপুরুষ ফন্ট এ লিখে সফট কপি uttamnbu@gmail.com এপাঠান সেপ্টেম্বর ২০২২ এর মধ্যে।পিডিএফ করবেন না, 9734518427

সূচীপত্র

সম্পাদকীয় – i

- সত্য সন্ধানী বৈরাগ্য : প্রসঙ্গ অসীম রায়ের 'কৃষ্ণস্বামী'
  সুভাষ চন্দ্র দাস # ১
- সত্যের আলো ও অন্ধকার : প্রসঙ্গ শম্ভু মিত্রের 'অসাময়িক'
  অঙ্কিতা মুখার্জী # ৫
- 'ভাঙা খাঁচার......' গল্প
  অপূর্ব কুমার সাহা # ১২
- ভাঙা বাংলা আর একটি মেয়ে
  ড. অরুণ সরকার # ১৮
- মহাভারতীয় উপন্যাস বিশেষ 'পাঞ্চজন্য' : কালের আবর্তে নবত্বের অনুসন্ধান
  চৈতালী দাস # ২৩
- মহাশ্বেতা দেবীর গল্পে নিম্নবিত্তের বয়ান: নির্বাচিত গল্প অবলম্বনে
  জয় সরকার # ২৮
- দারিদ্র উন্নয়নের পন্থা

  অভিজিত মণ্ডল[১] ও কবিতা দে[২] # ৩৩
- জঙ্গল মহলের লোক প্রযুক্তি
  ড. সুমন্ত মন্ডল # ৪০
- বিশ্বায়নের প্রভাব : অবলুপ্তির লুপ্তপ্রায় নদীয়া জেলার তৈজসপত্র
  সুকান্ত সরকার # ৪৭
- উত্তরবঙ্গের হারিয়ে যাওয়া লৌকিক ক্রীড়া বা খেলাধূলা
  কালীকৃষ্ণ সূত্রধর # ৫৮
- বিংশ শতাব্দীর চল্লিশের দশকের বাংলা ছোটগল্পে(নির্বাচিত) ভয়ানক রস
  লোকমান হাকিম # ৬৬
- অবলুপ্তির পথে বাংলা ধাঁধা : বিশ্বায়নের প্রভাব
  সামন্যা সেনগুপ্ত # ৭৪
- প্রসঙ্গ: তারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায়ের কথাসাহিত্যে সাম্প্রদায়িক দাঙ্গা
  বরুণ রায় # ৮২
- গীতা অনুসারে চঞ্চল মনকে নিয়ন্ত্রণে আনার সহজ পদ্ধতি
  মানস মন্ডল # ৮৮
- কিন্নর রায়ের ছোটগল্পে প্রতিফলিত মুসলিম জীবনালেখ্য এবং ব্রাত্যসমাজঃ নির্বাচিত গল্প অবলম্বনে একটি নিবিড় পাঠ
  পায়েল সরকার # ৯৫

ISSN: 2454-4884

গীতা অনুসারে চঞ্চল মনকে নিয়ন্ত্রণে আনার সহজ পদ্ধতি

মানস মন্ডল

মনকে নিয়ন্ত্রণে আনার মতো আর কোনো কঠিন কাজ এই জগত সংসারে মনে হয় আর নেই। তাই মনকে নিয়ন্ত্রণ করার কি কোনো সহজ পদ্ধতি আছে? এই প্রশ্ন শুধুমাত্র ছাত্রছাত্রীদেরই নয়। অভিভাবক, অভিভাবিকা থেকে শুরু করে সমাজের প্রত্যেক মানুষেরই খুব একটি সাধারণ প্রশ্ন। আমরা শুনে এসেছি যিনি মনকে নিয়ন্ত্রণ করতে পেরেছেন তিনি জগতের সবকিছুকেই জয় করতে পারেন।

আমরা হয়তো বসে আছি ঘরের ভিতরে কিন্তু মনটা যে কোথায় কোথায় ঘুরে বেড়ায় তার কোনো হিসাব নেই। অনেক সময় আমরা হয়তো সামনের দিকে তাকিয়ে আছি কিন্তু সামনের দিকে কে পেরিয়ে গেল কিছুতেই তা স্মরণ করতে পারি না ।অর্থাৎ তখন মন আমার অন্য কোথাও বিচরণ করছে। আমরা অনেক সময় দেখেছি হেডফোনে গান শুনতে থাকলেও আমরা কি গান শুনছি আমাদের মনে থাকে না,অর্থাৎ এত কাছে আমাদের হেডফোন থাকা সত্ত্বেও আমরা বুঝতে পারছি না আমাদের কানে কোন গান বাজছে অর্থাৎ মন আমাদের সঙ্গে নেই। যদি আমরা এই মনকে নিজের বশে রাখতে পারি তাহলে জীবনের অনেক সমস্যার হাত থেকে আমরা মুক্তি পেতে পারি। বেশিরভাগ ছাত্র- ছাত্রীরা শিক্ষক মহাশয় এর নিকট অভিযোগ জানায় স্যার অনেক করে পড়েছি কিন্তু কিছুতেই মনে থাকছে না, স্যার কি করে মনে রাখব তার উপায় বলে দিতে পারেন ? অনেক ক্ষেত্রে শিক্ষক মহাশয়রা কিন্তু ব্যাপারটা হাসির ছলে গ্রহণ করে। কিন্তু এটা একটা সমস্যা এবং আমরা গভীরভাবে যদি ভেবে দেখি ছাত্র-ছাত্রীরা কিন্তু এর দ্বারা ভীষণ ভাবে বিপর্যস্ত হয়। যদি আমরা এর সমাধান বের করতে পারি তাহলে অনেক ছাত্র-ছাত্রীদের বিভিন্ন দিক থেকে উপকার হতে পারে। শুধুমাত্র পড়াশোনা নয় তারা যে পথেই এগিয়ে যাক না কেন মন যদি সেই কাজের সাথে একত্রিত না থাকে তাহলে সেই কাজ কোনদিনই সঠিকভাবে সফল হতে পারে না। অর্থাৎ মনকে নিয়ন্ত্রণ আনতে পারলে ছাত্র ছাত্রীদের তো উপকার হবেই তাছাড়া ব্যক্তিগত,পারিবারিক, সামাজিক, আর্থিক, রাজনৈতিক, ধর্মীয় জীবনে অনেক গুরুতর সমস্যা আমরা খুব সহজে মিটিয়ে ফেলতে পারি।

তাই মনকে কিভাবে খুব সহজে নিজের বশে রাখা যায় এই প্রশ্নের উত্তর আজ গীতা থেকে খোঁজার চেষ্টা করব। শ্রীকৃষ্ণের মুখনিঃসৃত বাণী হলো গীতা আর এই গীতা তে তিনি কি বলতে চেয়েছেন সঠিকভাবে আজ অনুধাবন করার প্রয়াস করব। অর্জুন যে মুহূর্তে নিজের কোনটি কর্তব্যকর্ম আর কোনটি ধর্ম বুঝে উঠতে পারছিলেন না ঠিক সেই মুহুর্তে শ্রীকৃষ্ণ গুরুর মতো খুব সহজভাবে অর্জুনকে বুঝিয়ে দিয়েছিলেন কোনটি তার জীবনের কর্তব্যকর্ম কোনটি তার জীবনের ধর্ম হওয়া উচিত। তাই আমরাও যখন জীবনের সমস্যায় পরবো কোনটি আমাদের করনীয় হওয়া উচিত বুঝতে পারবো না তখন আমাদের গীতা মায়ের সাহায্যের প্রয়োজন। গীতা এমন একটি গ্রন্থ যেখানে আমাদের জীবনের প্রত্যেকটি সমস্যার সমাধানে আমরা খুঁজে পেতে পারি। তাই আজ আমরা মনকে কিভাবে নিয়ন্ত্রণ করা যায় সেই বিষয়ে শ্রীকৃষ্ণ অর্জুনকে যে উপদেশ দিয়েছিলেন তা দেখার চেষ্টা করব এবং আমরাও এই উপদেশ জীবনে গ্রহণ করার চেষ্টা করব। গীতার তৃতীয় অধ্যায় কর্মযোগ এর ৬

সাহিত্যে প্রেম ও জৈবিক চেতনার ক্রমবিকাশ

সম্পাদনা

সঞ্চয় মণ্ডল

Sahitya Prem O Jaibik Chetaner Kramabikash
Edited by : Sanchay Mondal
Published by Joyjit Mukhopadhaya. **Sopan**
206. Bidhan Sarani, Kolkata-700 006
(033) 2257-3738 / 9433343616 / 9836321521
E-mail : sopan1120@yahoo.com / publisopan@gmail.com
website : www.sopanbooks.in

প্রকাশ : ডিসেম্বর, ২০২০

© সঞ্চয় মণ্ডল
সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত
প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনও অংশেরই কোনওরূপ পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না, কোনও যান্ত্রিক উপায়ের (গ্রাফিক, ইলেকট্রনিক বা অন্য কোনও মাধ্যম, যেমন ফোটোকপি, টেপ বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য-সঞ্চয় করে রাখার কোনও পদ্ধতি) মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না বা কোনও ডিস্ক, টেপ, পারফোরেটেড মিডিয়া বা কোনও তথ্য সংরক্ষণের যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা যাবে।

প্রকাশক
জয়জিৎ মুখোপাধ্যায়
সোপান
২০৬, বিধান সরণি, কলকাতা-৭০০০০৬
ফোন : (০৩৩) ২২৫৭-৩৭৩৮/৯৪৩৩৩৪৩৬১৬ /৯৮৩৬৩২১৫২১
E-mail : sopan1120@yahoo.com / publisopan@gmail.com
website : www.sopanbooks.in

মুদ্রক
রবীন্দ্র প্রেস
১১এ, জগদীশ নাথ রায় লেন
কলকাতা-৭০০০০৬

মূল্য : ৯০০ টাকা

ফ্রয়েডবাদ ও মানিক বন্দ্যোপাধ্যায় / সুব্রত দত্ত ৫০৩
অভিজিৎ সেনের নির্বাচিত কথাসাহিত্যে প্রেম ও জৈবিক চেতনার প্রকাশ/আকবর হোসেন ৫০৯
কালের দর্পণের সাহিত্যে প্রেম ও জৈবিকতা / মৌমিতা চৌধুরী ৫১৭
সাহিত্যে প্রেম ও জৈবিক চেতনার ক্রমবিকাশ/লুৎফন্নেসা খাতুন ৫২২
বাংলা সাহিত্যে জৈবিক চেতনায় নারী কী পুরুষ /সনৎ মাহাত ৫২৫

পর্ব : ৬

প্রেম ও জৈবিক চেতনা : বাংলা নাটক

প্রেম ও জৈবিক চেতনায় রবীন্দ্র-নাটকে নারী / ড. চঞ্চল কুমার মণ্ডল ৫৩৩
'অভিজ্ঞান শকুন্তলম' নাটকে দুষ্যন্ত শকুন্তলার প্রেম ও ক্রমবিকাশ /মানস মন্ডল ৫৪৩
কাজী নজরুল ইসলামের নির্বাচিত নাটক :
প্রেম চেতনার আলোকে আলোকে / মহম্মদ দারাব ৫৫০

পর্ব : ৭

প্রেম ও জৈবিক চেতনা : ইংরেজি সাহিত্য ও অন্যান্য

Eugene O 'Neill's Desire Under the Elms :
A Journey Through Love and Revenge / Karaliprasad Mali ৫৫৯
Deconstructive Analysis of Emerging Consciousness from 'Survival' to 'Full Spectrum' on Kath Walker's We are Going and
Peter Reading's Faunal / Debashish Chattopadhyay ৫৬৮
LOVE IN TERMS: PERMANENCE IN LIFE, ROMANTIC ABSURDITY, FALSITY OF LOVE AND ALLEGED HOMOSEXUALITY IN
HAKESPEAREAN CANON / Dhiman Chakraborty ৫৭৫
Reading the Dynamics of Subordinate Carnality in
Taslima Nasrin's Lajja / Puja Ghosh ৫৮৪
প্রাবন্ধিক দুর্গাপদ চট্টোপাধ্যায়ের 'রাণুর রবীন্দ্রনাথ'
গ্রন্থের ফ্রয়েডীয় ও প্লেটোনিক প্রেম / সায়নী সরকার ৫৯০
সুবোধ ঘোষের ভারত প্রেমকথা : প্রেম ও জৈবিকতা /তমসা দত্ত ৫৯৭
দ্রৌপদী : পুরুষের কামনার অগ্নিতে দগ্ধ এক প্রেমময়ী নারীর প্রতিমূর্তি/অন্তিমা ভট্টাচার্য ৬০৪
লেখক পরিচিতি / ৬১২

‘অভিজ্ঞান শকুন্তলম’ নাটকে দুষ্যন্ত শকুন্তলার প্রেম ও ক্রমবিকাশ

মানস মন্ডল

মহাকবি কালিদাসের মোট তিনটি নাটক সংস্কৃত সাহিত্যাকাশে উজ্জল তিটি ধ্রুবতারার ন্যায়—অভিজ্ঞান শকুন্তলম, মালবিকাগ্নিমিত্রম ও বিক্রমোর্বশীয়ম। এই তিনটি নাটকের মধ্যে ‘অভিজ্ঞান শকুন্তলম’ কালিদাসের শ্রেষ্ঠ রচনা এই নাটকে মহাকবি কালিদাস দুষ্যন্ত শকুন্তলার প্রেমের উৎকর্ষ সাধনের প্রতিয়া সুন্দরভাবে ফুটিয়ে তুলেছেন। কামজ প্রেম ক্রমাগত স্বর্গীয় প্রেমে রূপান্তরিত হয়ে উঠেছে।

দুষ্যন্ত-শকুন্তলার প্রেমের সূচনা কন্বমুনির আশ্রম।হস্তিনাপুরাধিপতি রাজা দুষ্যন্ত একদা মৃগয়া বিহারে এসে কোনো একটি মৃগশিশুর পশ্চাদধাবন করতে করতে মালিনী নদীর তীরে অবস্থিত মহর্ষি কন্বের তপোবনের উপকণ্ঠে এসে পড়লে বৈখানম জানাল—“আশ্রমমৃগোহহয়ং ন হন্তব্যেঃ ন হন্তব্যঃ।” রাজা একথা শুনে মৃগহনন কার্য থেকে বিরত হয়ে তাপসদের অনুরোধে আশ্রমে প্রবেশ

করতে কার্য থেকে তাপসদের অনুরোধে আশ্রমে প্রবেশ করতে গিয়ে আশ্রমের দ্বারে পর্দাপন করতেই অব দক্ষিণবাহ স্পন্দিত হল। বিস্ময়চকিত রাজা ভাবলেন—এও কি সম্ভব? ঋষির আরমে দিব্যাঙ্গনা লাভ? রাজা অতঃপর ভাবলেন—“ অথবা ভবিতব্যানাং দ্বারানি ভবন্তি সর্বত্র”— অর্থাৎ যা অবশ্যম্ভাবী তা সর্বত্রই ঘটতে পারে।

দুষ্যন্ত-শকুন্তলার যে প্রেমের সূচনা ঘটেছে তা শারীরিক চাহিদার মধ্য দিয়েই। হস্তিনাপুরে রাজবাড়িতে রাজার পত্নী বর্তমান তবুও রাজা নারী শক্তির টানে ছুটে চলেছেন আশ্রমের দিকে। রমণীরত্নে চিনতে রাজার সমকক্ষ কেউ নেই। রাজা আশ্রমে ঢোকার পূর্বমুহূর্তে গাছের আড়াল থেকে ঋষি কন্যাদের গাছের আলবালে জলসিচনের ব্যাপারটি গভীর ভাবে দেখতে থাকে এবং রাজা নিজের মুখে স্বীকার করেছেন-“ অহো মধুরমাসাং দর্শনম” অর্থাৎ এদের দেখতে কি সুন্দর! তিনি আরো স্বীকার করেচেন—“শুদ্ধান্তদুলভমিদং বপুরাশ্রম বাসিনো যদি জনস্য।”[১] অর্থাৎ রাজা দুষ্যন্ত একথাই বলতে চেয়েছেনযে রাজবাড়ির রমণীদের থেকেও আশ্রমের ঋষি কন্যাদের শারীরিক সৌন্দর্য বেশি। বল্কলের স্বল্পাবরণে আচ্ছাদিত সহচরী যুগলসহ বৃক্ষের আলবালে জলসচেনরতা তাপসকন্যা

প্রবহমান বাংলা সাহিত্য ও সংস্কৃতি

সম্পাদনা

ড. প্রভাকর মণ্ডল
অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী

Prabahaman Bangla Sahitto O Sanskriti
Edited by Dr. Pravakar Mandal & Arindrajit Banerjee
Published by Joyjit Mukhopadhaya. **Sopan**
206, Bidhan Sarani, Kolkata-700 006
(033) 2257-3738 / 9433343616 / 9836321521
E-Mail : sopan1120@yahoo.com/publisopan@gmail.com
Website : www.sopanbooks.in

প্রথম প্রকাশ
জানুয়ারী, ২০২১

© অরীন্দ্রজিৎ ব্যানার্জী
সর্বস্বত্ব সংরক্ষিত
প্রকাশক এবং স্বত্বাধিকারীর লিখিত অনুমতি ছাড়া এই বইয়ের কোনও অংশেরই কোনওরূপ পুনরুৎপাদন বা প্রতিলিপি করা যাবে না, কোনও যান্ত্রিক উপায়ের (গ্রাফিক, ইলেকট্রনিক বা অন্য কোনও মাধ্যম, যেমন ফোটোকপি, টেপ বা পুনরুদ্ধারের সুযোগ সংবলিত তথ্য-সঞ্চয় করে রাখার কোনও পদ্ধতি) মাধ্যমে প্রতিলিপি করা যাবে না বা কোনও ডিস্ক, টেপ, পারফোরেটেড মিডিয়া বা কোনও তথ্য সংরক্ষণের যান্ত্রিক পদ্ধতিতে পুনরুৎপাদন করা যাবে না। এই শর্ত লঙ্ঘিত হলে উপযুক্ত আইনি ব্যবস্থা গ্রহণ করা যাবে।

প্রকাশক
জয়জিৎ মুখার্জী
সোপান
২০৬ বিধান সরণি, কলকাতা-৬
(০৩৩) ২২৫৭-৩৭৩৮ / ৯৪৩৩৩৪৩৬১৬ / ৯৮৩৬৩২১৫২১
ইমেল : sopan1120@yahoo.com/publisopan@gmail.com
Website : www.sopanbooks.in

মুদ্রক
রবীন্দ্র প্রেস
১১এ, জগদীশনাথ রায় লেন
কলকাতা-৭০০০০৬

মূল্য : ৬৯৯ টাকা

ISBN : 978-93-90717-48-4

সূচীপত্র

বাংলা কবিতায় বর্ষা

মেঘদূত গীতিকাব্যে বর্ষা প্রসঙ্গ	মানস মণ্ডল	১৩
রবীন্দ্রনাথের মানসী কাব্যের 'মেঘদূত' কবিতায় বর্ষা ও মেঘদূতের প্রভাব	উজ্জ্বলা পাইক মন্ডল	২১
বাংলা কবিতায় 'মেঘদূতের' উত্তরাধিকার : প্রসঙ্গ সত্যেন্দ্রনাথ দত্তের 'যক্ষের নিবেদন'	স্বরূপ দত্ত	২৮
বর্ষা সমাগমে রবীন্দ্র কবি চিত্তে মেঘদূত কাব্যের প্রভাব	সারদা বিষ্ণু	৩৩
মানসসরসীতীরে বিরহ শয়ানে দ্বিতীয় ঋতু ও প্রথম প্রণয় বিচ্ছেদ কাব্য	মৌমিতা সরকার	৩৭
রবীন্দ্রনাথের বর্ষা কাব্যে বৈষ্ণব পদাবলীর প্রভাব	মৃন্ময় কুমার মাহাত	৪৫
সত্যেন্দ্রনাথ দত্তের কবিতায় বর্ষা, ছান্দিক বিন্যাস	সঞ্চিতা বসু	৫৩
আধুনিক বাংলা কবিতায় বর্ষা ও মেঘদূত প্রসঙ্গ	মীনাক্ষী পাল	৫৯
বলেন্দ্রনাথ ঠাকুরের কাব্যে বর্ষার মাধুর্য : মেঘদূতের প্রভাব	পৃথা ঘোষ	৭১
কালিদাস থেকে শুরু করে আধুনিক কালের বাংলা কবিতার বর্ষা ও মেঘদূতের প্রভাব	উদয়কৃষ্ণ মিত্র	৭৬
নজরুল ইসলামের কবিতায় বর্ষা	দিলীপ মণ্ডল	৮৩
কালিদাসের মেঘদূত ও মধুসূদনের কাব্যে : প্রভাব ও প্রতিফলন	সুবীর ঘোষ	৮৮
মেঘদূত প্রসারে বিদ্যাপতির পদে বর্ষা প্রসঙ্গ	অতীশচন্দ্র ভল্লা	৯৬
বিহু কবিতায় লোক উপাদান, বর্ষার বার্তাবাহী, এক বিশ্লেষণাত্মক পর্যালোচনা	পাপড়ি বিশ্বাস	১০০
নির্বাচিত কবিতার আলোকে রবীন্দ্রনাথ ঠাকুর ও সমর সেনের কবিতায় ভাব বৈপরীত্য : প্রসঙ্গ বর্ষা ও মেঘদূতের প্রভাব	বিপ্লব ধর	১০৪
বর্ষা প্রসঙ্গ, মেঘদূতের প্রভাব, রবীন্দ্রনাথের সোনার তরী কবিতা	রণজিৎ কুমার বাউলিয়া	১১৫

রামপ্রসাদ সেন, জীবন ও সাহিত্য

কবিরঞ্জন রামপ্রসাদ সেন : জীবন ও রচনা	বিশ্বজিৎ হালদার	১২৪
শৈলী প্রসঙ্গে কবি রামপ্রসাদ সেন	নিরুপম ভট্টাচার্য	১৪৮
সমালোচকের চোখে রামপ্রসাদ ও তার পদাবলী	প্রতিম দত্ত	১৫৪

মেঘদূত গীতিকাব্যে বর্ষা প্রসঙ্গ

মানস মণ্ডল

মহাকবি কালিদাস বিরচিত গীতিকাব্যের বৈশিষ্ট্যযুক্ত অনন্য রচনা মেঘদূত। মন্দাক্রান্তা ছন্দের বৈশিষ্ট্যযুক্ত মেঘদূত কাব্যে স্বকর্তব্যভ্রষ্ট অভিশাপগ্রস্ত কোন এক যক্ষের এক বছরের জীবনকাহিনী ফুটে উঠেছে। যক্ষের বাস ভারতের উত্তর প্রান্তে অবস্থিত অলকাপুরিতে। যক্ষ কুবেরের উদ্যান রক্ষক ছিলেন। প্রিয়সান্নিধ্যের কামনাবশত যক্ষের কর্তব্যে অবহেলা লক্ষ্য করা যায়। আর সেই ফাঁকে মহেন্দ্রর হাতিগুলো এসে মানস সরোবরের সমস্ত পদ্ম নষ্ট করে দেয়। ক্রুদ্ধ কুবের যক্ষসে এক বছর ধরে স্ত্রীর বিচ্ছেদ বেদনা ভোগ করার শাস্তি দেন। ভারতের উত্তর প্রান্তে অবস্থিত অলকানগরী হোক দক্ষিণে রামগিরি পর্বতে তার নির্বাসন হয়।

মেঘদূতের দুটি খন্ড— পূর্বমেঘ ও উত্তরমেঘ। এই খণ্ডবিভাগ হয়তে কালিদাস করেননি, করেছেন টীকাকার মল্লিনাথ। রামগিরি থেকে অলকাপুরীর পূর্ব পর্যন্ত যাত্রাপথের বর্ণনা পূর্বমেঘ নামে পরিচিত। মেঘের পথ-রেখাকে উপলক্ষ করে দশার্ন, বিদিশা, অবন্তী, উজ্জয়িনী প্রভৃতি জনপদ সমূহের যে বর্ণনা মহাকবি কালিদাস পূর্বমেঘে দিয়েছেন তা সৌন্দর্যে অতুলনীয়। এই পথের বিভিন্ন জায়গায় আছে বহু বিখ্যাত গিরি নদী কালিদাস একে একে তাদেরও চিত্রাঙ্কন করেছেন। বেত্রবতী; নির্বিন্ধ্যা, সিন্ধু, রেবা, শিপ্রা প্রভৃতি নদীর গতিপথের সঠিক বিবরন দিয়ে কবি মেঘকে প্রলুব্ধ করেছেন সৌন্দর্যের শ্রেষ্ঠ তীর্থ উজ্জয়িনীতে উপস্থিত হওয়ার জন্য। এখানের বিভিন্ন নদী-পর্বতের বর্ণনার ক্ষেত্রে কবি যেন সমগ্র হৃদয় উজার করে দিয়েছেন। প্রত্যেকটি স্থান কবির যেন খুবই পরিচিত, যেন কবির প্রকৃত বাসভূমি উজ্জয়িনী প্রত্যেকটি স্থান কবির নখদর্পনে। যদি উজ্জয়িনী কবির প্রকৃত জন্মস্থান নাও হয়— এখানে তিনি যে দীর্ঘদিন বাস করেছিলেন তাতে আর কোনও সন্দেহ থাকে না। উজ্জয়িনী, তাঁর মতে, এ পৃথিবীতে সর্বশ্রেষ্ঠ নগরী স্বর্গ হতে বিদায় নিয়ে স্বর্গবাসিগণ মর্ত্তের স্বর্গ হিসাবে এই নগরীতে আসেন। কারণ প্রতিদিন প্রভাতকালে শিপ্রানদীর জলস্পর্শে সুশীতল বায়ু পদ্মগন্ধ সুরভিত হয়ে এখানে প্রবাহিত হয়; যে সব অট্টালিকা ঐ পুষ্প গন্ধে আমোদিত